निष्कर्ष-

वर्तमान समय में किसी भी समाज के विकास एवं परिवर्तन में संचार माध्यमों की महावपूर्ण भूमिका होती हैं। अध्ययन क्षेत्र वर्धा के आदिवासी इलाकों में भी आदिवासी समुदाय के विकास एवं परिवर्तन में संचार माध्यमों का महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिला हैं। आधुनिक संचार माध्यमों (टीवी, रेडियो, सिनेमा, समाचार-पत्र, सोशल मीडिया इत्यादि) के होते हुए भी पारंपरिक संचार माध्यम आज भी इस समुदाय में मौजूद है। यहाँ का आदिवासी समाज जब से आधुनिक संचार माध्यमों का उपयोग करने लगे हैं तब से अपने पारंपरिक माध्यमों का उपयोग किसी त्योहार या किसी कार्यक्रम के अवसर पर ही करते हैं। अत: यह कहने में कतई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आधुनिक संचार माध्यमों के उपयोग से उनके परंपरागत संचार माध्यम विलुप्त होते जा रहे हैं।

अध्ययन में यह पाया गया है कि आदिवासी समुदाय लगभग सभी संचार माध्यमों का उपयोग करते है लेकिन यह समाज टेलीविज़न माध्यम का सर्वाधिक उपयोग करते है। टेलीविज़न माध्यम ने उनके जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव डाला है। संचार माध्यमों के उपयोग से आदिवासी समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीति स्तर पर बदलाव तो हुआ ही है साथ ही उनकी परंपरा एवं जीवन शैली में भी बड़ा परिवर्तन नजर आया है। इन माध्यमों के प्रभाव से इनकी सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत डगमगाने लगी है। आदिवासी समाज के लोग अपनी मूल भाषा एवं संस्कृति को छोड़कर अन्य दूसरी भाषा एवं संस्कृति को अपना रहे हैं। आम बोल-चाल में मराठी, हिंदी व अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने लगे हैं। और इनके रहन-सहन एवं खान-पान में भी बदलाव हो रहा है। ग्रामीण आदिवासी की अपेक्षा शहरी एवं पढ़ा-लिखा आदिवासी समाज में ज्यादा परिवर्तन देखने को मिला है।

संचार माध्यमों ने आदिवासी समाज के धार्मिक जीवन पर भी प्रभाव डाला है। इस समाज का अपना अलग 'सरना धर्म' होता है और इस धर्म के अनुसार अपनी धार्मिक क्रिया कलाप किये जाते है लेकिन बाहरी व्यक्तियों के संपर्क और संचार माध्यमों के प्रभाव से अब ये अन्य दूसरे धर्मों (हिंदू, ईसाई, बौद्ध) को अपना रहे हैं। वर्धा के कुछ आदिवासी समुदाय ने भी बौद्ध धर्म को अपना लिये हैं लेकिन कुछ समुदाय ऐसे भी है जो

अपने प्रकृति पूजक देवी-देवताओं के साथ ही साथ हिंदू देवी-देवताओं की भी पूजा करने लगे हैं। आदिवासियों की राजनीति व्यवस्था दो तरह की है। पहली अपने समाज के द्वारा बनाए गए नियम कायदे जिनका समाज के मुखिया के द्वरा दिए गए दिशा-निर्देश के अनुसार अनुपालना की जाती है। इस व्यवस्था में दंड का प्रावधान भी है। इसमें मुखिया जो दंड देता है वह समाज को स्वीकार्य होता है। दूसरी है भारतीय राजनीति व्यवस्था। समाज जैसे-जैसे शिक्षित होने लगा है उनमें वैसे-वैसे ही राजनीतिक चेतना पैदा होने लगी है। संविधान में आरक्षित सीटों का प्रावधान होने की वजह से आदिवासी समाज की राजनीति में भागीदारी बढ़ी है। वर्धा में राजनीतिक स्तर पर आदिवासी समाज सक्रिय तो है लेकिन भागीदारी कम है। आदिवासी समाज से इस क्षेत्र में कोई सांसद व विधायक नहीं है। यहाँ के इस समुदाय की भागीदारी पंच-सरपंच एवं नगर परिषद सदस्य तक ही सीमित है वह भी आरक्षित सीटों पर।

संचार क्रांति के दौर में संचार माध्यमों ने इस समुदाय के युवाओं पर सबसे ज्यादा प्रभाव डाला है। इस समाज के युवाओं में रेडियो, टीवी, व लैपटॉप तथा एंड्रॉइड मोबाईल का जबरदस्त प्रभाव देखने को मिला है। इन माध्यमों ने युवाओं की बोली-भाषा, रहन-सहन एवं जीवन शैली पर बहुत प्रभाव पड़ा है। आदिवासी समाज में संचार के साधनों में सर्वाधिक लोकप्रिय टेलीविज़न रहा है। जिसका उपयोग सूचना प्राप्त करने और मनोरंजन के लिए करते हैं। टेलीविज़न के अलावा रेडियो, सिनेमा, समाचार-पत्र एवं मोबाईल का भी उपयोग करते हैं। मीडिया के प्रभाव से आज कोई बच नहीं पाया है कहीं ना कहीं किसी भी रूप में हर व्यक्ति प्रभावित है। देखा जाए तो आदिवासी समाज भी इसे अछूता नहीं है। एक ओर देश-दुनिया में घट रही घटनाओं को जानने के लिए आदिवासी में जिज्ञासा बढ़ी है वहीं दूसरी ओर वैचारिक स्तर में भी बदलाव हो रहा है। उनके गीत-संगीत-नृत्य, रीति-रिवाज, पर्व-उत्सव सीमित होते जा रहे हैं।उनकी सामुदायिक और परम्परागत आस्था के सूचक 'सरना' की जगह नए-नए देवी-देवता और भगवान थोपे जा रहे हैं। हिंदू देवी-देवताओं का संस्करण उनकी संस्कृति में संलग्न किया जा रहा है। इसके अलावा उनके पर्व-उत्सवों का स्थान हिन्दू त्यौहार लेते जा रहे हैं। वैवाहिक अनुक्रम में कुल प्रधान का स्थान पुजारी विशेषकर ब्राह्मण लेता जा रहा है। वहीं आदिवासियों में भी सामाजिक दिखावें बढ़ रहे हैं। घोड़ी-डीजे व स्टेज कार्यक्रम की संस्कृति भी पनप रही है। मृत्यु संस्कारों में पिंडदान शुरू हो गया है। सामाजिक स्तर से यह आपसी स्नेह और प्रेम भाव से स्थानांतरित

होने में अधिक कारगर हो रहा है। धर्म से, सामासिक संस्कृति के सौहार्दयपूर्ण व्यवहार और आत्मीयता, भावनात्मक जुड़ाव और लगाव के व्यावहारिक संरक्षण द्वारा, बहुआयामी विकास या किसी प्रलोभन के नाम पर या दबाव और बलपूर्वक, संचार माध्यमों के द्वारा आदिवासियों के बीच आज हिन्दू संस्कृति को लुभाने का काम बड़े पैमाने पर चल रहा है। इस तरह से उनकी प्रचलित संस्कृति को मिश्रित और संक्रमित किया जा रहा है।